OBSERVATIONS BY THE CHAIR

श्री सभापतिः माननीय सदस्यगण, अत्यंत दर्दनाक, पीड़ादायक, अमर्यादित आचरण को देखकर मैं दुखी हूं। शासन 6 दशक के बाद तीसरे निरंतर लगातार काल में है। मैंने चर्चा की और मैंने अनुरोध किया कि प्रतिपक्ष के नेता को बिना रोक-टोक के बोलने दीजिए। मैंने उनको पूरा अवसर दिया। आज वे सदन छोड़कर नहीं गए हैं, मर्यादा छोड़कर गए हैं। आज उन्होंने मुझे पीठ नहीं दिखाई है, बल्कि भारतीय संविधान को पीठ दिखाई है। आज उन्होंने मेरा अनादर और आपका अनादर नहीं किया है, उस शपथ का अनादर किया है, जो संविधान के तहत ली है। भारत के संविधान की इससे बड़ी अपमानित बात नहीं हो सकती। ऐसा कैसे हो सकता है कि House of Elders, the Upper House, हमें देश का मार्गदर्शन करना है, मैं उनके आचरण की भर्त्सना करता हूं। देश के 140 करोड़ लोग इससे आहत होंगे। सदन का मतलब है कि जब आपने अपनी पूरी बात कह दी, तो सत्ता पक्ष की बात सुनो।

माननीय सदस्यगण, आप सभी जानते हैं कि कल देर रात तक चर्चा की गई और हर सदस्य को मौका दिया गया। It is an occasion where they have challenged the Indian Constitution, they have outraged the spirit of the Indian Constitution, and they have disregarded the oath that they have taken. मैं इस कुर्सी पर बैठकर इतना दुखी हूं कि भारत के संविधान का इतना बड़ा अपमान, इतना बड़ा मज़ाक! भारत का संविधान हाथ में रखने की किताब नहीं है, जीने की किताब है। मैं आशा करता हूं कि वे आत्मचिंतन करेंगे, मंथन करेंगे, अपने दिल को टटोलेंगे और कर्तव्य पर आएंगे।

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS - *Contd.*

श्री सभापतिः माननीय प्रधान मंत्री जी, आप बोलिए।

श्री नरेन्द्र मोदीः आदरणीय सभापति जी, आपकी वेदना मैं समझ सकता हूं। 140 करोड़ देशवासियों ने जो निर्णय दिया है, जो जनादेश दिया है, उसे ये पचा नहीं पा रहे हैं। कल उनकी सारी हरकतें फेल हो गईं और आज उनका वह लड़ाई लड़ने का भी हौसला नहीं था, इसलिए वे मैदान छोड़कर भाग गए हैं।

आदरणीय सभापति जी, मैं तो कर्तव्य से बंधा हुआ हूं और यहाँ डिबेट में कोई स्कोर करने के लिए नहीं आया हूं। मैं तो देश का सेवक हूं, देशवासियों की तरह हिसाब देता हूं, देश की जनता को अपने पल-पल का हिसाब देना अपना कर्तव्य मानता हूं।

आदरणीय सभापति जी, वैश्विक परिस्थितियाँ ऐसी पैदा हुईं कि फर्टिलाइज़र के लिए बहुत बड़ा संकट पैदा हुआ। हमने देश के किसान को मुसीबत में नहीं आने दिया और करीब-करीब 12 लाख करोड़ रुपये की फर्टिलाइज़र में सब्सिडी दी है, जो भारत की आज़ादी के इतिहास में सर्वाधिक है। उसी का परिणाम है कि हमने हमारे किसान तक फर्टिलाइज़र का इतना बड़ा बोझ जाने नहीं दिया और सरकार ने उसको अपने कंधे पर उठा लिया है।

आदरणीय सभापति जी, हमने एमएसपी में भी रिकॉर्ड बढ़ोतरी की है। इतना ही नहीं हमने खरीद के भी नए रिकॉर्ड बनाए हैं। पहले एमएसपी की घोषणा होती थी, लेकिन किसानों से कुछ भी लिया नहीं जाता था, बातें बताई जाती थीं। हमने पहले की तुलना में अनेक गुणा ज्यादा खरीद कर-करके किसानों को सामर्थ्यवान बनाने का प्रयास किया है।

आदरणीय सभापति जी, हमने दस वर्षों में कांग्रेस सरकार की तुलना में किसानों तक धान और गेहूं में ढाई गुणा अधिक पैसा पहुंचाया है और हम आने वाले पाँच सालों में सिर्फ इसी की इन्क्रीमेंटल वृद्धि करके रुकना नहीं चाहते हैं, हम नये-नये क्षेत्रों में उन कठिनाइयों का अध्ययन करके उसकी मुक्ति के लिए प्रयास कर रहे हैं। इसलिए आदरणीय सभापति जी, हमने अन्न भण्डारण का विश्व का सबसे बड़ा अभियान हाथ में लिया है... और लाखों की तादाद में विकेंद्रित व्यवस्था के तहत अन्न भंडारणों की रचना करने की दिशा में काम चल पड़ा है। फल और सब्जी एक ऐसा क्षेत्र है कि हम चाहते हैं कि किसान उस तरफ मुड़े और उसके भंडारण के लिए भी हम एक व्यापक इन्फ्रास्ट्रक्चर की दिशा में काम कर रहे हैं।

आदरणीय सभापति जी, सबका साथ, सबका विकास - इस मूल मंत्र को लेकर हमने देश सेवा की हमारी यात्रा को निरंतर विस्तार देने का प्रयास किया है। देशवासियों को गरिमापूर्ण जीवन देना, यह हमारी प्राथमिकता रही है। आज़ादी के बाद अनेक दशकों तक जिनको कभी पूछा नहीं गया था, आज मेरी सरकार उन्हें पूछती तो है ही, उनको पूजती भी है। हमने हमारे दिव्यांग भाई-बहनों की कठिनाइयों को समझकर उन्हें मिशन मोड में माइक्रो लेवल पर एड्रेस करने का प्रयास किया है और व्यवस्थाएं विकसित करने का प्रयास किया है, ताकि वे गरिमापूर्ण जीवन जी सकें और उन्हें किसी का सहारा कम-से-कम लेना पड़े, इस दिशा में हमने काम किया है।

आदरणीय सभापति जी, हमारे समाज में किसी-न-किसी कारणवश एक उपेक्षित वर्ग है, यानी एक प्रकार से समाज में बार-बार हरदूत होने वाला वर्ग है, वह ट्रांसजेंडर वर्ग है। हमारी सरकार ने ट्रांसजेंडर साथियों के लिए कानून बनाने का काम किया है। जब पश्चिम की दुनिया के लोग यह सुनते हैं, तो उन्हें भी गर्व होता है कि अच्छा, भारत इतना प्रोग्रेसिव है। भारत की तरफ बड़े गर्व की नजरों से देखा जाता है। हमने उन्हें मुख्य धारा में लाने का प्रयास शुरू किया है। आपने देखा होगा कि पद्म अवाड्र्स में भी ट्रांसजेंडर्स को अवसर देने में हमारी सरकार आगे आई है।

आदरणीय सभापति जी, हमारा घुमंतू जनजातीय समुदाय, हमारे घुमंतू साथी, हमारे बंजारा परिवार, उनके लिए एक अलग कल्याण बोर्ड बनाया है, ताकि उनकी आवश्यकताओं को हम एड्रेस कर सकें और उन्हें भी एक स्थायी, सुरक्षित और संभावनाओं वाला जीवन प्राप्त हो, उस दिशा में हम काम कर रहे हैं।

आदरणीय सभापति जी, हम एक शब्द लगातार सुनते आए हैं - पीवीटीजी, पीवीटीजी, पीवीटीजी। हमारे जनजातीय समूहों में यह सबसे पीछे रहा हुआ है। आज़ादी के इतने सालों के बाद भी जिन्होंने उन्हें निकट से देखा होगा, पता चलता है कि वे कैसी हालत में जीते हैं। उनकी तरफ किसी ने नहीं देखा। हमने एक विशेष व्यवस्था की है और पीएम जनमन योजना के तहत, 24,000 करोड़ रुपये... यह समुदाय बिखरा हुआ है, छोटी संख्या में है, वोट की उनकी ताकत नहीं है और यहाँ देश की परंपरा ऐसी है कि जिसकी वोट की ताकत है, उसी की चिंता करना! समाज के ऐसे अति पिछड़े लोगों की कोई चिंता नहीं करता था। हमने वह चिंता की है, क्योंकि हम वोट की राजनीति नहीं करते हैं, हम विकास की राजनिति करते हैं।

आदरणीय सभापति जी, हमारे देश में पारंपरिक पारिवारिक कौशल्य भारत की विकास यात्रा और व्यवस्था का एक अंग रहा है। जो हमारा विश्वकर्मा समूह है, जिनके पास परंपरागत हुनर है और जो समाज की आवश्यकताओं को पूरा करता है, लेकिन उन्हें कभी एड्रेस नहीं किया गया था। हमें करीब-करीब 13 हजार करोड़ रुपये की योजना से विश्वकर्मा समुदाय को आधुनिकता की तरफ ले जाना है, जिससे उनके अंदर प्रोफेशनलिज्म आए।

आदरणीय सभापति जी, गरीबों के नाम पर बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था, लेकिन यह हालत थी कि मेरे रेहड़ी-पटरी वालों को कभी बैंक के दरवाजे तक देखने की हिम्मत नहीं होती थी। देश में पहली बार 'पीएम स्वनिधि' योजना के तहत रेहड़ी-पटरी वालों की चिंता की गई है। आज वे ब्याज के कुचक्र से बाहर आए हैं। अपने परिश्रम और ईमानदारी से रेहड़ी-पटरी वालों को बैंकों से लोन मिले हैं। बैंक वाले भी खुश हैं और लेने वाले भी खुश हैं। जो कल फुटपाथ पर रेहड़ी लेकर बैठता था, वह आज एक छोटी दुकान बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। जो पहले खुद मजदूरी करता था, आज वह एक-दो लोगों को रोजगार देने की दिशा में काम कर रहा है। यही कारण है कि चाहे गरीब हों, दलित हों, पिछड़े हों, आदिवासी हों या महिलाएं हों, उन्होंने हमारा भारी समर्थन किया है।

आदरणीय सभापति जी, हम women-led development की बात करते हैं। दुनिया के प्रगतिशील देश भी women development को तो स्वाभाविक रूप से स्वीकार करते हैं, लेकिन जब women-led development की बात करते हैं, तो उनके उत्साह में भी थोड़ी कमी नजर आती है। ऐसे समय में भारत ने नारे नहीं, निष्ठा के साथ women-led development की ओर कदम बढ़ाए हैं। महिला सशक्तिकरण का लाभ आज दिख रहा है, हर क्षेत्र में दिख रहा है और भारत की विकास यात्रा में वह कन्ट्रिब्यूट कर रहा है। मैं आदरणीय सांसद सुधा मूर्ती जी का आभार व्यक्त करता हूं कि कल उन्होंने चर्चा में महिलाओं के आरोग्य विषय पर बल दिया था। उसका माहात्म्य क्या है, उसकी आवश्यकता क्यों है - इस पर उन्होंने बड़े विस्तार से कहा था। उन्होंने एक बात यह भी बड़ी इमोशनल बताई थी कि मां अगर चली गई, तो उसका कोई उपाय नहीं होता, वह फिर नहीं मिल सकती है। उन्होंने यह बड़ी भावात्मकता से बताया था। हमने women health, sanitation, wellness पर 10 वर्षों में एक priority sector के नाते काम किया है।

आदरणीय सभापति जी, toilets हों, sanitary pads हों, gas connections हों या pregnancy के दौरान vaccination की व्यवस्था हो, इन सबका फायदा हमारे देश की माताओं-बहनों को मिला है। आरोग्य के साथ-साथ महिलाएं आत्मनिर्भर बनें, उस दिशा में भी हम लगातार काम कर रहे हैं। हमने बीते वर्षों में जो 4 करोड़ घर बनाए हैं, उनमें से हमने ज्यादातर घर महिलाओं के नाम पर रजिस्टर किए हैं। बैंकों में खाते खुलने से, मुद्रा और सुकन्या समृद्धि जैसी योजनाओं से आर्थिक फैसलों में महिलाओं की भूमिका भी बढ़ी है, भागीदारी भी बढ़ी है और एक प्रकार से वे परिवार में भी अब निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा बनने लगी हैं।

आदरणीय सभापति जी, Women Self-Help Groups से जुड़ी 10 करोड़ बहनों का आत्मविश्वास तो बढ़ा ही है, लेकिन साथ-साथ उनकी आय भी बढ़ी है। अभी तक 1 करोड़ बहनें, जो यह Self-Help Group का काम करती हैं, वे मिलकर गांव में छोटा-छोटा कारोबार करती हैं, उनकी तरफ गांव वालों की नजर भी नहीं जाती थी। आज मैं बड़े गर्व से कह सकता हूं कि उन्हीं में से 1 करोड़ बहनें लखपति दीदी बनी हैं। हम आने वाले समय में इस आंकड़े को बढ़ाकर 3 करोड़ बहनों को लखपति दीदी बनाने की दिशा में बढ़ रहे हैं।

आदरणीय सभापति जी, सरकार का प्रयास है कि हर नए सेक्टर को हमारी महिलाएँ लीड करें, अगुवाई करें। उस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं। नई टेक्नोलॉजी आती है, लेकिन महिलाओं के नसीब में वह बहुत आखिर में आती है। हमारी कोशिश है कि नई टेक्नोलॉजी का पहला अवसर हमारी महिलाओं के हाथ लगे। इसी के तहत 'नमो ड्रोन दीदी', यह अभियान बहुत सफलतापूर्वक आगे बढ़ा है। आज गाँवों में किसानों को टेक्नोलॉजी के माध्यम से मदद करने का काम गाँव की हमारी महिलाएँ कर रही हैं। मैं जब उनसे बात कर रहा था, तो वे मुझसे कह रही थीं कि साहब, हम तो साइकिल चलाना भी नहीं जानते थे, आपने हमें पायलट बना दिया है और पूरा गाँव हमें 'पायलट दीदी' के नाम से जानने लगा है। यह गरिमापूर्ण बात उनके जीवन में आगे बढ़ने के लिए बहुत बड़ी ताकत बन जाती है, एक बहुत बड़ा ड्राइविंग फोर्स बन जाती है।

आदरणीय सभापति जी, देश का दुर्भाग्य है कि ऐसे संवेदनशील मामलों में भी जब राजनीति होती है, तब देशवासियों को, विशेषकर महिलाओं को अकल्प पीड़ा होती है। यह जो महिलाओं के साथ होते अत्याचार में विपक्ष का सेलेक्टिव रवैया है, यह सेलेक्टिव रवैया बहुत ही चिंताजनक है। आदरणीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से देश को बताना चाहता हूँ, मैं किसी राज्य के खिलाफ नहीं बोल रहा हूँ, न ही मैं कोई राजनीतिक स्कोर करने के लिए बोल रहा हूँ, लेकिन कुछ समय पहले मैंने बंगाल से आई कुछ तस्वीरों को देखा, सोशल मीडिया पर वीडियो देखा। एक महिला को वहाँ सरेआम सड़क पर पीटा जा रहा है। वह बहन चीख रही है, लेकिन वहाँ खड़े हुए लोगों में से कोई उसकी मदद के लिए नहीं आ रहा है, वे वीडियो बनाने में लगे हुए हैं। जो घटना संदेशखाली में हुई, जिसकी तस्वीरें रोंगटे खड़े करने वाली हैं, लेकिन बड़े-बड़े दिग्गजों को मैं कल से सुन रहा हूँ, इसके लिए पीड़ा उनके शब्दों में भी नहीं झलक रही है। इससे बड़ा शर्मिन्दगी का दुखद चित्र क्या हो सकता है! जो अपने आप को बहुत बड़े प्रगतिशील नारी नेता मानते हैं, वे भी मुँह पर ताले लगा कर बैठ गए हैं, क्योंकि उनके संबंध राजनीतिक जीवन से जुड़े किसी दल से हैं या उस राज्य से हैं। इसलिए आप महिलाओं पर हो रही पीड़ा पर चुपचाप हो जाएँ! आदरणीय सभापति जी, मैं समझता हूँ कि जिस प्रकार से दिग्गज लोग भी ऐसी बातों को नजरअंदाज करते हैं, तब देश को तो पीड़ा होती है, हमारी माताओं और बहनों को ज्यादा पीड़ा होती है। आदरणीय सभापति जी, राजनीति इतनी सेलेक्टिव हो और जहाँ उनकी राजनीति के अनुकूल नहीं होता है, उनको साँप सूँघ जाता है। यह बहुत चिंता का विषय है।

आदरणीय सभापति जी, भारत की जनता ने तीसरी बार पूर्ण बहुमत की स्थिर सरकार चुन कर देश में तो स्थिरता और निरंतरता को आदेश दिया ही है, लेकिन इस चुनाव के नतीजों ने विश्व को आश्वस्त किया है। इन नतीजों के कारण भारत विश्व भर के निवेशकों के लिए एक बहुत बड़ा आकर्षण का केन्द्र बन कर उभर रहा है।

1.00 P.M.

अब 'ifs' और 'buts' का समय पूरा हो चुका है और भारत में विदेश का निवेश भारत के नौजवानों के लिए रोजगार के नए अवसर लेकर आता है, भारत के युवाओं के टैलेंट को विश्व के मंच पर ले जाने का एक अवसर बन जाता है। आदरणीय सभापति जी..